# हिंदी साहित्य के अध्ययन में कृत्रिम बुद्धिमता की प्रासंगिकता

श्रीमती सुनील कुमारी, सहायक प्राध्यापिका हिंदी, राजकीय महाविद्यालय आदमपुर, हिसार

## सार

आज के समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) समाज के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन का माध्यम बन रही है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। शैक्षणिक और शोध कार्य सदैव समाज और तकनीकी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता है। जैसे ही समाज या तकनीकी क्षेत्र में बदलाव आता है उसी के फलस्वरूप इन क्षेत्रों में भी अवश्य ही बदलाव हो जाता है। AI आधारित टूल्स न केवल कविताओं, कहानियों और निबंधों की रचना में सहायक सिद्ध हो रहे हैं, बल्कि हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच तक पहुँचाने में भी योगदान दे रहे हैं। साथ ही, डिजिटल संरक्षण और टेक्स्टमाइनिंग जैसी तकनीकों ने साहित्यिक धरोहर को सुरक्षित और शोध के लिए सुलभ बना दिया है। हालाँकि, इसके उपयोग से प्रामाणिकता, नैतिकता, कॉपीराइट और पारंपरिक पठन संस्कृति जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में हिंदी साहित्य में AI की भूमिका, संभावनाएँ, चुनौतियाँ और उद्धरणों के माध्यम से इसका विवेचन किया गया है। AI प्रत्येककार्य कोवैश्विक पहचान दे रहा । ए आई हिंदी साहित्य शोधकर्ताओं को भी उनके शोध कार्य में बहुत मदद कर रहा है।